सम्बद्ध डा० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या

BA 1st Sem Drawing File

CamScanner

कला क्या है ?

कला मानव की सहज अभिव्यक्ति है। प्राचीन गुहा-वासियों से लेकर कांच की खिड़कियों से झाँकने वाले मानव तक कला का विकास क्रम रुका नहीं है, बल्कि देशकाल की परिस्थितियों को निभाते हुए वह आगे बढ़ा है। कितने ही माध्यमों का वह अब तक उपयोग कर चुका है। जो कुछ भी उसे मिला उसने उसे ही सृजन का माध्यम बना लिया।

जयशंकर प्रसाद के शब्दों में :- "ईश्वर की कृतित्व शक्ति का संकुचित रुप जो हमको बोध के रुप में मिलता है वही कला है।"

इस प्रकार जीवन एक "कला" है, अथवा जीने की कला जैसे कि - प्राचीन साहित्य और "गीता" से सर्वविदित है कि "भगवान श्रीकृष्ण" चौंसठ कलाओं से परिपूर्ण थे। कला भावनात्मक विषय है और रुचि की इसमें महत्ता है। भाव-विभाव-अनुभावों से जो संचारीभाव विचार प्रकटन में भूमिका निभाते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो अभिव्यक्ति करने को बाध्य करती है। अभिव्यक्ति इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि इससे सुख प्राप्त करता और सुख प्राप्त करना ही सदैव से मानव ध्येय रहा है। साथ ही कलाकार अतिसंवेदनशील होने के कारण दूसरों को भी प्रभावित करता है। यह सृजन शक्ति व्यक्ति में अपनी विशेष मनोभावनाओं संवेदनायें विचार-पद्धति होने के कारण होती हैं। क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं के कारण नई-२ सम्भावनायें जन्म लेती हैं। सभ्यता एवं संस्कृति का विकास होता है और कला का नया रुप सामने आता है तथा नये मापदण्ड स्थापित होते हैं।

कला "सत्यम् शिवम् एवं सुन्दरम्" अभिव्यक्ति करती है। कला का ध्येय है-सुन्दर होना, परन्तु सत्य एवं शिव के साथ सत्य कटु होता है, परन्तु कला उसे कल्याणकारी बनाकर जीवन का मार्ग-दर्शन करती है, क्योंकि कला जीवन की व्याख्या करती है। यह तो मन के रंगो की अभिव्यक्ति करती है। जीवन और शक्ति प्रदान करने वाली संजीवनी है। इसलिए भारत में इसे योग साधना माना गया है। जिसकी अनुभूति प्रत्येक मन में होती है। अतः कला कल्याणकारी सौन्दर्यकारी व सत्य को प्रस्तुत करने का मार्ग है। इस प्रकार यह जीवन की पथ-प्रदर्शिका भी है।

कला का अर्थ :- कला शब्द की परिभाषा से पूर्व उसका अर्थ जानना भी आवश्यक है। कला शब्द का भारतीय भाषाओं में प्रयोग प्राचीन काल से प्रचलित है, परन्तु प्राचीन काल में शिल्प, शब्द का प्रयोग अधिक प्राप्त हुआ है। पाणिनी के अष्टाध्यायी में शिल्प शब्द का प्रयोग ललित एवं उपयोगी दोनों कलाओं के लिए हुआ है। शिल्प, हुनर या कार्य-कौशल आदि के अर्थ में कला शब्द का प्रमाणिक प्रयोग सर्वप्रथम भरतमुनि ने अपने "नाट्य शास्त्र" में पहली शताब्दी के लगभग किया था।

"न तज्ज्ञान न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला"

अर्थात् ऐसा कोई ज्ञान नही होता, ऐसा कोई शिल्प नही होता, कोई विद्या नहीं कोई कला नहीं।

कला शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत विद्वानों ने "कल" शब्द से मानी है, जिसका अर्थ- "सुन्दर", "मधुर" कोमल तथा सुख देने वाला है। कला का अर्थ हुनर व कौशल है। अतः कला का अर्थ है, शिल्प कौशल की प्रक्रियों से युक्त सुन्दर एव सुखद रूप। कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति "कड्" धातु से मानते हैं। जिसका अर्थ है- प्रसन्न करना, मस्त करना आदि। कुछ विद्वान इसे "क" धातु से मानते हैं। इसका अर्थ "आनन्द" रूप में लेते हैं। संस्कृत भाषा में "कला" शब्द का व्यावहारिक अर्थ है- "किसी भी कार्य को पूर्ण कुशलता या निपुणता से करना।

यूनान में कलाओं को "तेख्ने" (टेक्नीक) कहते थे। प्राचीन लैटिन शब्द "आर्स" (ARS) का अर्थ भी कौशल अथवा शिल्प है, जिसमें अंग्रेजी का "आर्ट" (ART) शब्द विकसित हुआ।

अंग्रेजी भाषा में "कला" शब्द का पर्यायवाची आर्ट (ART) शब्द है, जो पर्याप्त नवीन है। इस शब्द का प्रयोग तेरहवीं शताब्दी से प्रचलित हुआ है। आर्ट (ART) शब्द आर (Ar) धातु से बना है। जिसका अर्थ है- बनाना, ठीक से करना या पैदा करना। लैटिन भाषा में "आर्ट" शब्द "आर्स" या "आर्टेम" से उत्पन्न माना जाता है। आरम्भ में इस शब्द का प्रयोग कौशल का ही पर्यायवाची था, परन्तु धीरे-2 परिधि के अन्तर्गत वास्तु, मूर्ति, चित्र, काव्य, संगीत, नृत्य तथा भाषाण का भी विवेचन किया जाने लगा।

कला शब्द की व्युत्पत्ति :- कला शब्द की रचना कला + अच् + टाप् धातु एवं प्रत्यय के संयोग से हुई है। कला का शाब्दिक अर्थ है। "किसी वस्तु का छोटा अंश, चन्द्रमण्डल का षोडश अंश, राशि के तीसवें भाग का सातवाँ अंश" कल धातु, आवाज, गणना आदि अर्थों की सूचक है। आज हवा हवाने से हमारा आशय अव्यक्त से व्यक्त की ओर उन्मुख होना है, क्योंकि "कलाकार भी अपने व्यक्त भावों को कतिपय साधनों द्वारा व्यक्त करता है।"

डॉ॰ रामदत्त भारद्वाज के अनुसार "कला" शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है "कवि" और "लास्य" इन दोनों प्रथमाक्षरों से "कला" शब्द निर्मित है। कवि का लास्य ही कला है। "लास्य शब्द का कोषार्थ है - नृत्य अथवा उछल-कूद कवि के काव्य में कवि के अव्यक्त भावों को अपनी रचना के माध्यम से व्यक्त करते हैं। कला की तृतीया व्युत्पत्ति इस प्रकार की जा सकती है, क + ल = कला, क = कामदेव, सौन्दर्य, प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द। ला = देना। "कलाति ददाति कला" अर्थात् सौन्दर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु का नाम कला है। इसी आशय से दण्डी ने कला को नृत्य "गीता प्रभृतय: कला कामार्थसंश्रय" कहा है।

कला की अवधारणाएं :- भिन्न-2 कालों में भिन्न-2 स्थानों में अनेक विद्वानों ने कला की परिभाषाएं अपने युग की मान्यताओं और आवश्यकताओं के साथ प्रस्तुत की हैं।

1- प्राचीन भारतीय साहित्य की साहित्यिक रचना शिवसूत्रविमर्शिनी के अनुसार -

" वस्तु का सुन्दर रूप बनाने वाली विशेषता को कला बताया गया है"

" कलयति स्वरूपं आवेशयति वस्तुनि वा "

2- भर्तृहरि और नीति शतक के अनुसार- " साहित्य संगीत कला विहीन् साक्षात् पशु पुच्छ विषाणहीन " कहकर कला के उच्च स्थान एवं महत्व को मानव जीवन में स्थापित किया है।

3- पं० भोलाशंकर तिवारी के अनुसार- " कला में मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति करता है " इन्ही के अनुसार " शारीरिक या मानसिक कौशल, जिसका प्रयोग किसी कृत्रिम निर्माण में किया जाये वही कला है। " उदाहरणार्थ- " मिट्टी के खिलौने हैं, कलाकार मिट्टी लेता है अनेक प्रकार के प्राकृतिक रूपों को गीली मिट्टी " से कृत्रिम रूप में बदलता है। "

4- रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार- " कला में मानव स्वयं अपनी (अपने विचारों की) अभिव्यक्ति करता है और वस्तु की नहीं ",

5- जैनेन्द्र कुमार के अनुसार - " अनुभूति की अभिव्यक्ति कला है ",

6- मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार- " अभिव्यक्ति की शक्ति ही कला है। "

7- रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार - " एक ही अनुभूति को दूसरे तक पहुंचा देना ही कला का रहस्य है। "

पाश्चात्य विद्वानो द्वारा :-

1- यूनानी दार्शनिक प्लेटो के अनुसार- " कला सत्य की अनुकृति है। "

2- अरस्तू के अनुसार - " कला अनुकरणीय है " (Art Lmitates Nature)

4- प्रसिद्ध इटालियन मूर्तिकार एवं चित्रकार माइकेल एंजिलो के अनुसार – "कला के महान कृत्यों को दिव्य झलक की छाया कहा है"। The Work of art are but a Shadow of Divine reflection."

5- महान इटालियन दार्शनिक बेनीदीतो क्रोंचे ने कहा है कि – "कला वही है, जैसा हर एक उसे जानता है" Art is what everybody know it is" अतः "कला बाह्य प्रभावों की अभिव्यक्ति है।"

6- रस्किन के अनुसार – "हर एक महान कला ईश्वरीय कृति के प्रति मानव आह्लाद की अभिव्यक्ति है।" "Art great art is the expression of mans great delight in God work and not his own."

7- वरमोन वलैक अनुसार – "सुन्दरता को व्यक्त करना कला है"

8- टॉलस्टाय के अनुसार – "यदि अपने भावों को क्रिया, वर्ण, रेखा, ध्वनि अथवा शब्द द्वारा इस प्रकार से अभिव्यक्त किया जाये कि उसके दर्शन से अथवा श्रवण द्वारा कलाकार के मन में भाव जाग्रत हो जाये तो उसे कला से सम्बोधित किया जायेगा।

9- हीगल के अनुसार – "कला आदि भौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम है।"

10- फ्रायड के अनुसार – "कला दमित वासनाओं का उभरा हुआ रूप है।"

11- गोथे के अनुसार – "कला की सबसे बड़ी समस्या यह रहती है कि किस प्रकार महान सत्य की प्रति कृति प्रस्तुत कर सके।"

कला विभाजन :- कलाओं का वर्गीकरण अलग-2 युगों में अलग-2 विधियों से होता रहा है। प्राचीन भारत में प्रकृति को 'देवशिल्प' तथा मानव कृतियों को 'मानव शिल्प' कहा गया था। मानव शिल्प के पुनः दो भाग हुये - चारु शिल्प (ललित कला) और दूसरा कारु शिल्प (उपयोगी कला), यूरोप में इन्हें 'फाइन आर्ट' और 'क्राफ्ट' कहा गया। उपयोगी कलाओं को यूरोप में 'उदार कलाएं' भी कहा गया है, कुछ आधुनिक विद्वानों ने कलाओं का वर्गीकरण 'मेजर आर्ट' (Major Art) (ललित कलाओं के लिए) और 'माइनर आर्ट' (minor Art) (उपयोगी कलाओं के लिए) के रूप में किया है।

कला का वर्गीकरण :- कला को सामान्य रूप में अनेक विद्वान तथा विचारक अविभाज्य मानते हैं। इनमें प्रमुख रूप से क्रोचे हैं परन्तु अन्य विद्वान कला को केवल दो वर्गों में विभाजित करते हैं।

i- ललित कला

ii- उपयोगी कला।

ललित कला एवं उपयोगी कला का वर्गीकरण बहुत प्रचलित एवं चर्चित है। किन्तु यह विभाजन किसी कठोर सीमा-रेखा को खींचकर नही किया जा सकता। क्योंकि ललित कला और उपयोगी कला दोनों में सौन्दर्य विद्यमान रहता है परन्तु ललित कला अपने शुद्ध रूप में आनन्द प्रदान करती है और उपयोगी कला में रूपाकृति की संरचना उपयोगी वस्तुओं की उपयोगिता के लिए किया जाता है। उदाहरणार्थ- किसी कालीन की बनावट में बनी हुई कलाकृति कालीन की उपयोगिता में आड़े नही आती परन्तु एक जैसे- अनेक कालीन उपयोगी कला की ओर ही इशारा करते हैं। कोई कुम्हार जब किसी बर्तन को नया रूप देने में आनंदमग्न होता है, तब वह एक उपयोगी कलाकृति हो जाती है। किन्तु एक जैसे अनेक रूपों को श्रम से गढ़ता है तब उसका वह व्यवसायिक कार्य हो जाता है। क्योंकि वहा मौलिकता और सहज अभिव्यक्ति समाप्त हो जाती है। यह सम्भव है कि कोई व्यवसायी अपने कलात्मक हुनर से रूपों का सृजन कर ले किन्तु निरन्तर आवृत्ति किये जाने पर रूपों से कला चेतना समाप्त हो जाती है। स्थूल

आकृतियों की आवृत्ति व्यवसाय होती है। अतः उपयोगी रूप कलाकृति कैसे मान सकते हैं? भले ही उनमें आकर्षण का गुण बना रहे। कौशल जब भावना के साथ अभिव्यक्ति में सहयोग करता है तब रचना कलात्मक हो जाती है।

असित कुमार हल्दार ने अपनी पुस्तक "ललित कला की धारा" में विलियम मौरिस का कथन उद्धृत किया है "कला दो प्रकार की होती है। एक वह जिसकी मनुष्य को आवश्यकता नहीं है, फिर भी उसका अस्तित्व है तथा दूसरे प्रकार की कला वह है जिसकी उत्पत्ति भौतिक आवश्यकताओं के कारण होती है, वह कला भी मानवीय आत्मा की लालसाओं से ही सम्बन्धित है"

भारतीय कला की विशेषताएं :- कला की अपनी एक देशगत विशेषताएं होती हैं जो उसकी मौलिकता को बनाये रखती है। ये विशेषताएं उसे एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व प्रदान करती हैं। भारतीय कलाकारों ने भी सौन्दर्य निपुणता एवं बारीकी के साथ वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला एवं शिल्पकला के क्षेत्र में उत्तम कृतियों का निर्माण किया। कला के माध्यम से भारतीय कलाकारों ने भारतीय आस्था विश्वास एवं संस्कृति का स्पष्ट वर्णन किया है। इनकी कृतियों में गति लयपूर्णता एवं संवेदनशीलता दिखाई पड़ती है। भारतीय कला की कतिपय विशेषताएं भी है जो इस प्रकार है -

1- **प्राचीनता :-** भारतीय कला के साक्ष्य सैंधव काल से ही मिलने लगते हैं। अतः इसकी प्राचीनता स्वयं सिद्ध है।

2- **धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता :-** भारत एक धर्म प्रधान देश है, जिसका जिसका प्रभाव कला पर भी दिखाई पड़ता है। भारतीय कला में समस्त धर्मों का समावेश था। जिसका प्रमाण प्राप्त मूर्तियों में मिलता है।

3- **पारम्परिकता :-** भारतीय कलाकारों ने अपनी कृतियों में प्राचीन कला शैली की परम्पराओं का सुन्दर समन्वय किया है।

4. **प्रतीकात्मकता** :- भारतीय कला में प्रतीकात्मकता का बड़ा महत्व है। प्रारम्भिक बौद्ध एवं जैन धर्म की प्रतिमाएं प्रतीकात्मक रूप से निर्मित की जाती है।

5. **अनामता** :- भारतीय कला- कृतियों में उसके कर्ता के नाम का सर्वथा अभाव है।

6. **भावात्मकता** :- भारतीय कला भावना प्रधान भारतीय कलाकारों ने अपनी भावनाओं को प्रस्तर मूर्तियों में पिरो दिया है। ये भावनाएं बाह्य एवं आन्तरिक दोनों रूपों में इनकी कृतियों में दिखाई पड़ती है।

7. **आदर्शवादिता** :- भारतीय चित्रकार यथार्थ की अपेक्षा आदर्श में ही विचरण करता है। वह संसार में जैसा देखता है, वैसा चित्रण न करके, जैसा होना चाहिए, वैसा चित्रण करता है और जब जहाँ से चाहिए की भावना का प्रादुर्भाव होता है तो वही से आदर्शवाद आरम्भ हो जाता है। राजा को कलाकार आदर्श राजा के रूप में ही चित्रित करता है। इसीप्रकार बुद्ध ज्ञान देने वाले के रूप में आदर्श बन गये, अतः भिन्न-२ मतों में भिन्न-२ आदर्श है जो कलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं।

8. **मुद्राएं** :- भारतीय चित्रकला, मूर्तिकला एवं नृत्यकला में मुद्राओं का अत्यधिक महत्व दिया गया है। उन्हे आदर्श रूप प्रदान करने के लिए चमत्कारपूर्ण तथा आलंकारिक रूप प्रदान किये गये हैं। आकृति की रचना कलाकार ने यथार्थ की अपेक्षा भाव अथवा गुण के आधार पर की है। मुद्राओं के विधान से आकृति की व्यंजना की गयी है। भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' के अभिनय-प्रकरण में अंगों तथा उपांगों के अलग-२ प्रयोगों द्वारा अनेक मुद्राओं का अवतरण किया है। ध्यान, विचार, संकेत, उपदेश, निकालना, पकड़ना, क्षमा, तपस्या, भिक्षा, त्याग, वीरता क्रोध, प्रतीक्षा, प्रेम, विरह, एकाकीपन आदि मानव भावों को बड़ी ही स्वाभाविक मुद्राओं को दर्शाया है।

अजन्ता चित्र शैली में दर्शित आकृतियाँ अपनी भावपूर्ण नृत्य- मुद्राओं के कारण

संसार भर में प्रसिद्ध है। इसी प्रकार मुगल, राजपूत शैलियों में भी विविध नृत्य मुद्राओं के सुन्दर भावपूर्ण में समावेश है।

9. **रेखा तथा रंग :-** भारतीय चित्रकला रेखा-प्रधान है। उसमें गति है। रेखाओं द्वारा बाह्य सौन्दर्य के साथ-२ गम्भीर भाव भी कलाकार ने चित्रों में बड़ी कुशलता से दर्शाये हैं। रेखा द्वारा गोलाई, स्थितज-चलद्युता, परिप्रेक्ष्य इत्यादि सभी कुछ प्रदर्शित हैं। यूँ तो आकृतियों में सपाट रंग का प्रयोग किया है, किन्तु सांकेतिक आधार पर है, साथ ही आलंकारिक या कलात्मक योजना पर आधारित है।

10- **अलंकारिकता :-** भारतीय कला में अलंकरण का अत्यधिक महत्व है। क्योंकि भारतीय कलाकार ने सत्यं, शिवम्. के साथ सुन्दर की कल्पना की है और इसलिए सुन्दर तथा आदर्श रूप के लिए वह अलंकरणों का अपनी रचना में प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए- खंजन अथवा कमल के समान नेत्र, चन्द्र के समान मुख, शुक चंचु के समान नासिका, कदली स्तम्भों के समान जंघाएं। इसी प्रकार भारतीय आलेखनों में अलंकरण का उत्कृष्ट रूप दिखाई देता है। जैसे राजपूत, मुगल चित्रों में धारियों में फूल, पत्तियों, पशु-पक्षियों का अलंकरण मिलता है।

CamScanner

CamScanner

CamScanner

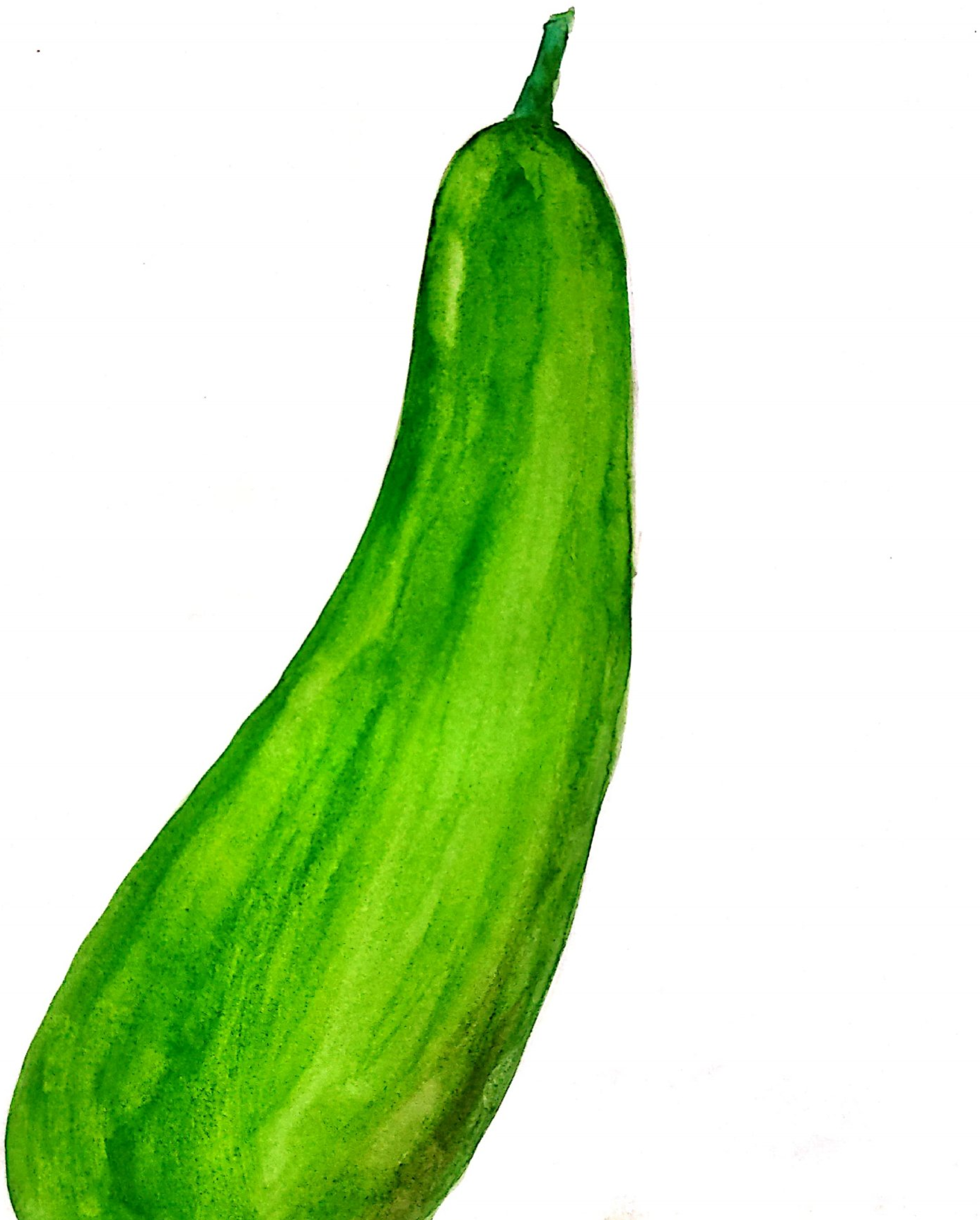

CamScanner

CamScanner

CamScanner

CamScanner

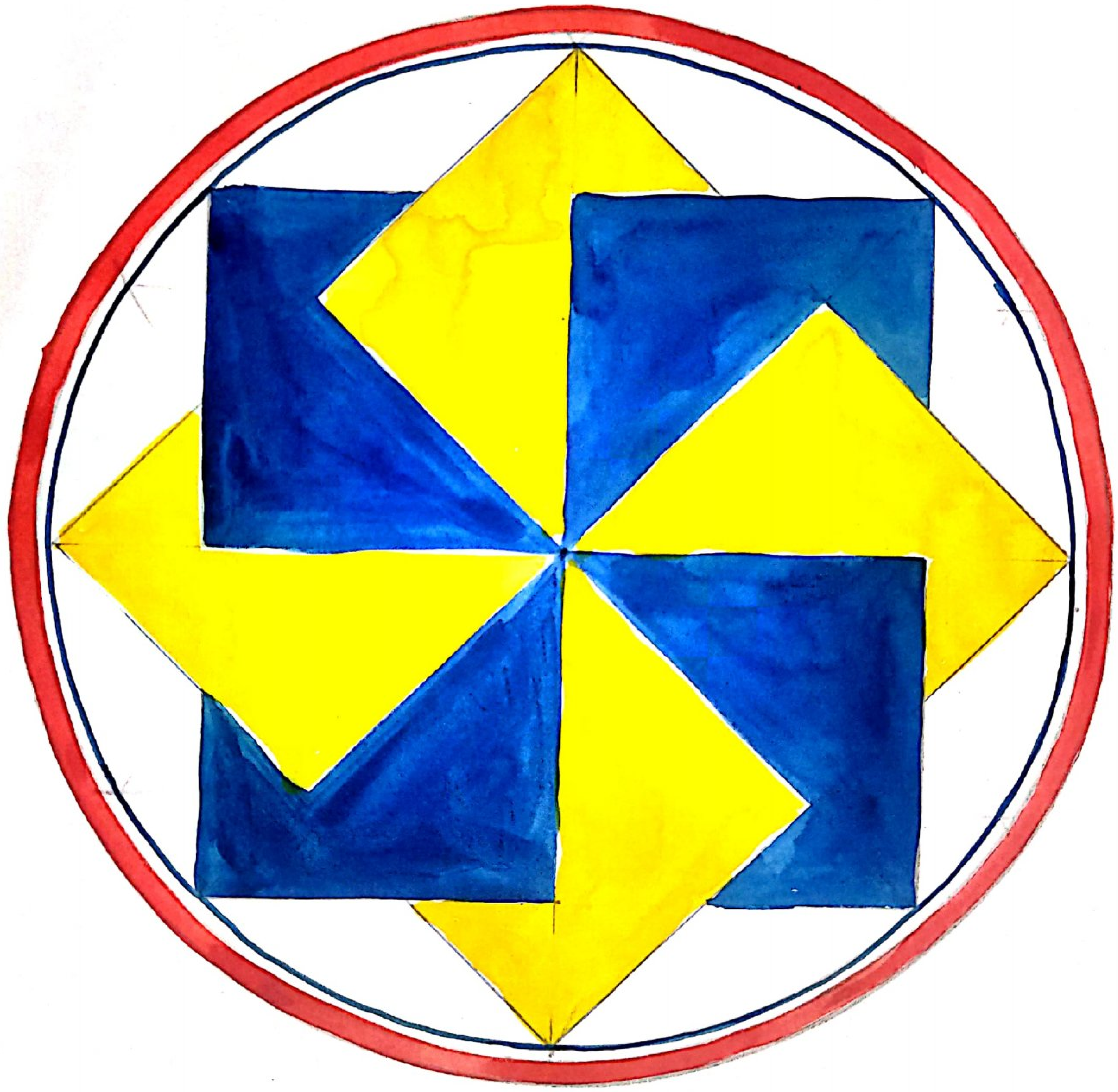

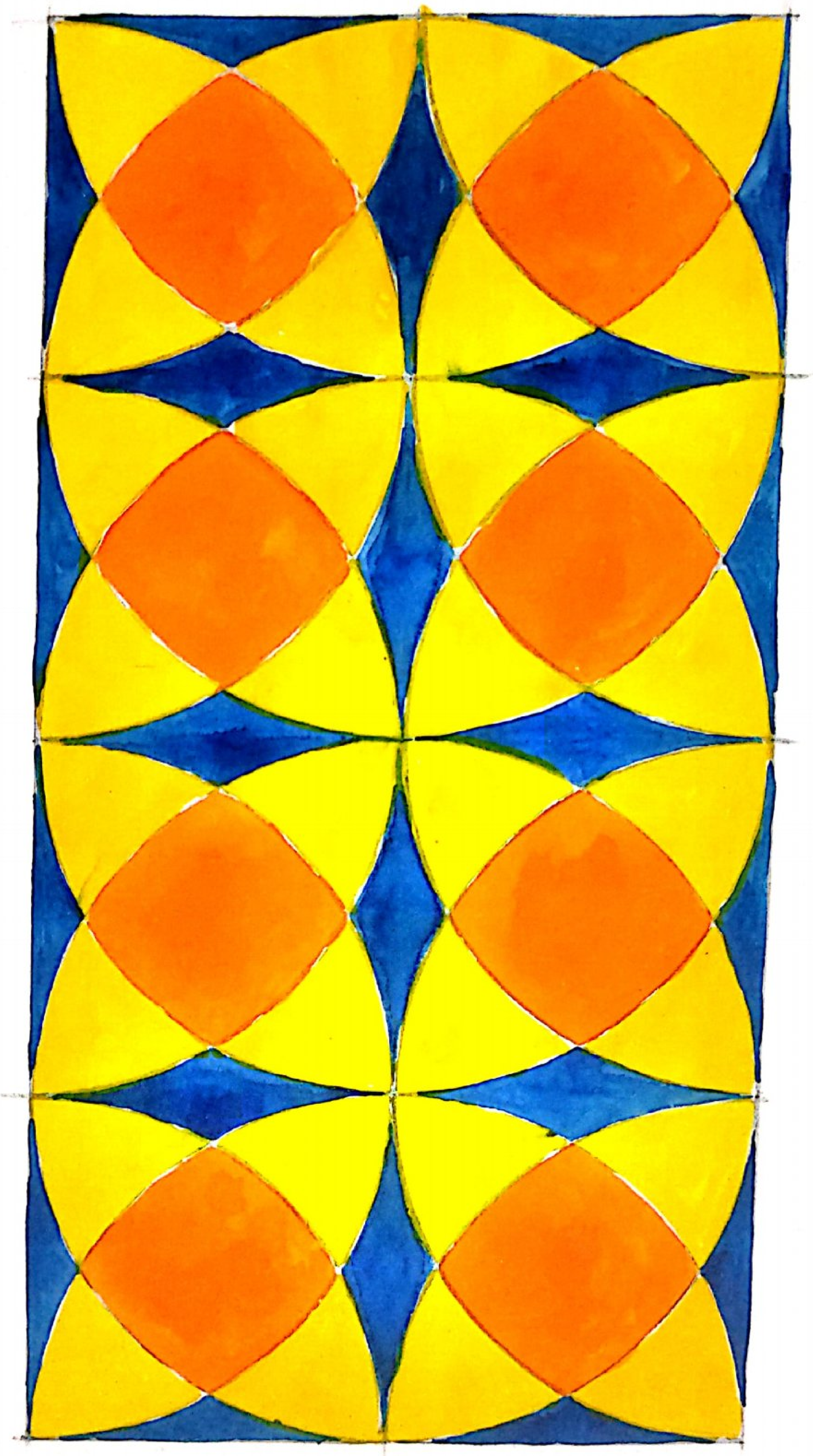

CamScanner

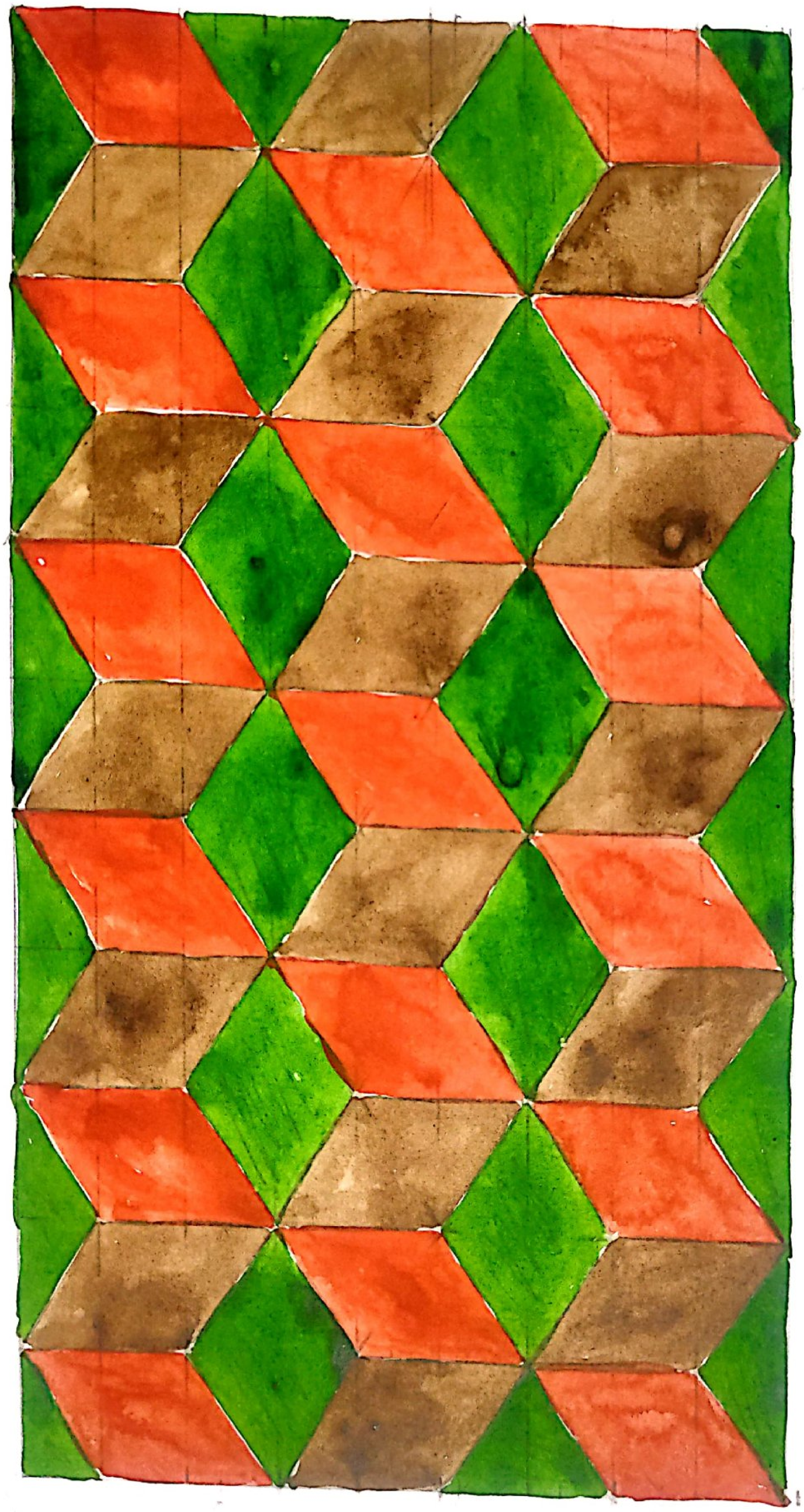

CamScanner

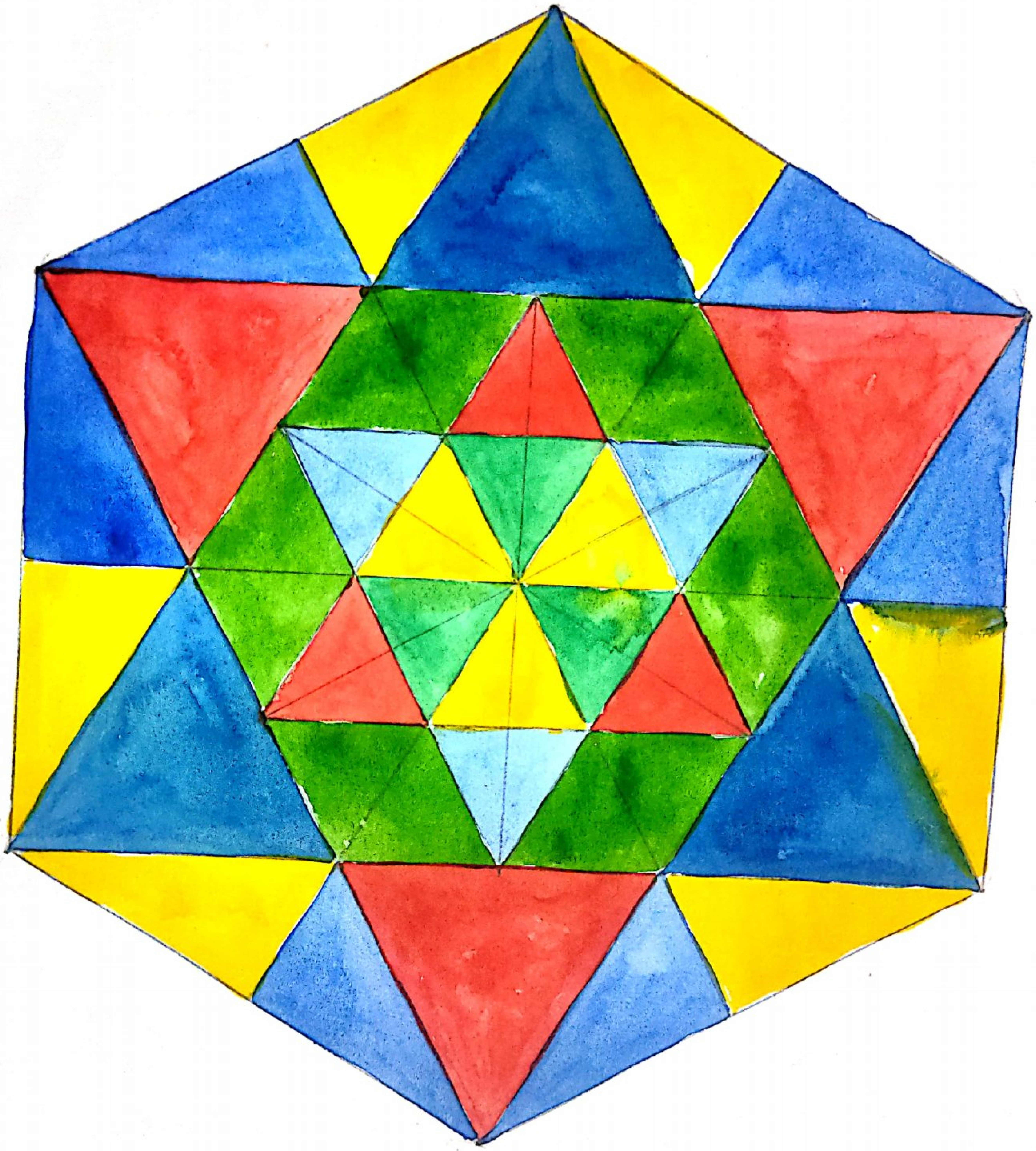

CamScanner